विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन

*डॉ. रीना जैन
**प्रीति जैन

सार संदर्भ

डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार, ''समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की बौद्धिक परम्पराएं एवं तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है। शिक्षक के व्यक्तित्व का बालकों के जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ता है।'' प्रस्तुत शोध में शोधकत्री ने निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से तथा शोध प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया है क्योंकि इस विधि द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वांछित प्रदत्तों का सकंलन किया जा सकता है। शोध पत्र में विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन के बीच के सम्बंध को बताया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है और शिक्षक समाज को सही गति एवं दिशा देने में सहायक होता है। आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण आदि का भी शिक्षक जगत एवं शिक्षक के स्वरूप तथा भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस निमित्त आधुनिक अध्यापकों की व्यावसायिक सोच, मूल्य एवं प्रतिबद्धता आदि तथ्यों में भी बड़ा भारी परिवर्तन आया है। इसलिए शिक्षण न केवल आजीविका उपार्जन का अवसर प्रदान करता है बल्कि यह पुराने एवं नोबल व्यवसाय में शामिल किया जाता है और शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। परन्तु एक शिक्षक अपने बहुमूल्य कार्यों और जिम्मेदारियों का प्रदर्शन नहीं कर सकता, जबतक कि वह अपने व्यवसाय और व्यक्तित्व को अद्यतन नहीं कर लेता है। इसलिए ही अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षण का सार्थक मूल्यांकन आवश्यक हो गया है। कुछ लोगों को शिक्षण व्यवसाय इसलिए भी अच्छा लगता है कि इसमें अन्य प्रकार की गतिविधियों (पाठ्य सहगामी क्रियाएं) की अधिक संभावना होती है। शिक्षण व्यवसाय ने राजस्थान में पिछले कई वर्षों से युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया है और बहुत से युवाओं ने शिक्षण को अपना व्यवसाय भी चुना है और आज एक शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आज भारत में निजी एवं सरकारी शिक्षण संस्थाओं की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि होती जा रही है। इससे यह सिद्ध होता है कि युवाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में विकास तो हुआ है। शिक्षण व्यवसाय में नौकरियों की संभावना भी बढ़ी है और अध्यापकों के वेतन में भी वृद्धि हुई है। शिक्षण व्यवसाय में कम घंटों के कार्य में जॉब सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इसके साथ ही प्राईवेट ट्यूशन और कोचिंग संस्थानों में अतिरिक्त पैसा भी कमाया जा सकता है।

व्यक्ति जिस स्थान पर कार्य करता है, वहां के अधिकारी कर्मचारी आदि में आपस में सौहार्दपूर्ण सामंजस्यता, समानता का माहौल नहीं हो तो वह उस व्यवसाय से संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता है। किसी कार्य के सम्पादन से प्राप्त आय भी व्यवसाय रूचि की निर्धारक होती है। एक अध्यापक को विशेषज्ञ होना अति आवश्यक है वह चाहे– नर्सरी विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, मिडिल विद्यालय, उच्च विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, संस्थान या विशेष विद्यालय स्तर का हो, इससे उसकी कार्य सुरक्षा और कुशलता में भी वृद्धि होती है, और उसकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता के विकास की संभावना भी बढ़ जाती है। एक अध्यापक के लिए मूलभूत विशेषताओं का होना आवश्यक है जैसे धैर्य, दृढ़ निश्चयी, विद्यार्थियों के अनुसार ग्रहणशील, और खुश मिजाज हो। जिससे विद्यार्थी हमेशा उसे आदर्श के रूप में देखे, न की उससे डरे।

कार्य या व्यवसाय रूचि का न हो तो जीवन जीने के लिए पर्याप्त संतुष्टि नहीं होगी। इसी प्रकार भविष्य में उस व्यवसाय के माध्यम से प्राप्त होने वाले उन्नति के अवसरों की न्यूनतम और अधिकतम मात्रा भी व्यावसायिक रूचि का निर्धारण करती है। वर्तमान परिस्थितियों में अध्यापक अपने व्यवसाय के प्रति स्थानांतरण, परिवार नियोजन, चुनाव तथा सर्वेक्षण आदि कर्त्तव्यों की अधिकता, तथा अधिक योग्यताधारी होते हुए भी निम्न कक्षाओं में अध्यापन करवाने की मजबूरी के कारण उनकी व्यावसायिक सोच तथा उनके कार्य स्तरों में बदलाव आया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने 1998 में विशेष रूप में लिखा था कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की दक्षता और प्रतिबद्धता पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षण अभिवृत्ति

किसी भी मनुष्य के किसी घटना, वस्तु के प्रति उसका दृष्टिकोण, उस व्यक्ति के विचार आदि का आश्य अभिवृत्ति से है। यह सभी दृष्टिकोण ही उसके विचार, व्यक्ति, वस्तुओं व घटनाओं के प्रति उनके व्यवहारों को एक सही दिशा देता है। एक मनोभाव ही ऐसा है जो मनुष्य को किसी भी व्यक्ति, वस्तु व पदार्थ के विपक्ष में व पक्ष में करती है। अभिवृत्ति एक ऐसी है जो व्यक्तियों, विशेष परिस्थियों अथवा वस्तुओं के प्रति संगति पूर्ण व्यवहार करने के लिए हमेशा तत्पर रहने की दशा है। अध्यापन की प्रति अध्यापक की धनात्मक अथवा ऋणात्मक सोच, मनोभाव ही शिक्षण अभिवृत्ति कहलाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति का तात्पर्य शिक्षक का अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति झुकाव, तत्परता एवं समर्पण से है, जिसका सीधा प्रभाव उसके कक्षागत शिक्षण से है।

व्यावसायिक प्रतिबद्धता

व्यावसायिक प्रतिबद्धता एक भावात्मक अवधारणा है, जिसमें किसी वृत्ति अथवा वृत्ति के विधान एवं दायित्व ग्रहण करने की स्वीकृति होती है। प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता को चर के रूप मे चयनित कर उसकी भूमिका को अध्ययन किया गया है, अर्थात् चिन्तन का मुख्य बिन्दु ''शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता'' है। शिक्षण व्यावसायिक प्रतिबद्धता सरल रूप में एक शिक्षक के रूप में इस वृत्ति के आवश्यक मानकों, संस्कार, सिद्धान्तों, विधानों एवं मूल्यों में गहरी निष्ठा प्रकट करने से है।

शिक्षण व्यावसायिक प्रतिबद्धता सरल रूप में एक शिक्षक के रूप में इस वृत्ति के आवश्यक मानकों, संस्कार, सिद्धान्तों, विधानों एवं मूल्यों में गहरी निष्ठा प्रकट करने से है।

व्यावसायिक मूल्य

व्यावसायिक मूल्य से तात्पर्य शिक्षकों के अपने व्यवसाय के प्रति नैतिक मूल्यों से है। इनके अन्तर्गत शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वरीयताओं, शिक्षण के मापदण्डों के निर्धारण, विद्यालय, समाज एवं विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक एवं चारित्रिक विशेषताओं को सम्मिलित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

इस अध्याय में शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्य से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया है।

मेहरोत (1973)[1] द्वारा अध्यापक शिक्षक कार्यक्रमों का उनकी अभिवृत्ति एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि शिक्षक जिन्होंने पाठ्यक्रम समय पर पूरा किया उनकी अभिवृत्ति उन शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई जिन्होनें पाठ्यक्रम समय पर पूरा नहीं किया।, दोनों ही स्थितियों में महिलाओं की अभिवृत्ति पुरूषों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक पाई गई।, अधिक शिक्षण अनुभव प्राप्त शिक्षकों की अभिवृत्ति अधिक पाई गई।, अधिक आयु वाले शिक्षकों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई गई।

सिंह (1978)[2] ने विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की सृजनशीलता तथा उनके स्वप्रत्यय, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके कक्षा–शिक्षण व्यवहार के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने का प्रयास किया। अध्ययन के पाया कि शिक्षकों के कक्षा–शिक्षण अन्तःक्रिया चर प्ध्क व पध्क तथा उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

त्रिपाठी (1978)[3] ने विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण तथा अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध में एक अध्ययन किया तथा पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

वेरा (1982)[4] ने थाइलैंड क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का उनके शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि शहरी अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, ग्रामीण अध्यापकों की तुलना में अच्छी थी।, पुरूष अध्यापकों की तुलना में महिला अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति ज्यादा थी।, कम अनुभव अध्यापकों की तुलना में ज्यादा अनुभवी अध्यापकों की अभिवृत्ति शिक्षण व्यवसाय के प्रति ज्यादा अच्छी थी।, अध्यापक की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर अनुभव और क्षेत्र के बीच अन्तःक्रिया के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।, राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, प्राइवेट विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अच्छी थी।, आयु के साथ शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।, कला संकाय के शिक्षकों की अभिवृत्ति, विज्ञान संकाय के अध्यापकों की तुलना में ज्यादा अच्छी थी।, विवाहित अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, अविवाहित अध्यापकों की तुलना में अच्छी पायी गई।, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और शिक्षण क्षमता, आपस में सम्बन्धित है। सहगामी क्रियायें और शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया।

गर्ग, डी. पी. (1983)[5] –''टीचिगं एटीट्यडू एण्ड टीचिगं विहैवियर आफॅ हाइली सैटिस्फाइड एण्ड डिस–सैटिस्फाइड टीचर्स ऑफ सैकण्डरी लेवल'', अध्ययन में निष्कर्ष के रूप मे प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकगणों की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं शिक्षण मनोभाव का अध्यापकगणों के वेतन से सम्बन्ध नहीं है। शिक्षण मनोभाव, व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं शिक्षण व्यवहार सार्थक रूप से विषयी के लिंग से सम्बन्धित पाये गये। महिला अध्यापकगणों की शिक्षण मनोभाव पुरूष अध्यापकगणों की तुलना में अधिक अनुकूल पाई गई। महिला अध्यापकगणों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पुरूष अध्यापकगणों की तुलना में अधिक उच्च पाई गई । अत्यधिक सन्तुष्ट शिक्षक, असन्तुष्ट अध्यापकगणों की तुलना में अधिक अनुकूल मनोभाव का प्रदर्शन करते हैं। अत्यधिक सन्तुष्ट शिक्षक, बेहतर शिक्षण व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं।

सेन (1984)[6] ने शिक्षकों के व्यक्तित्व और उनके शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व सम्बन्धित क्षेत्रों का अध्ययन में पाया कि

अध्यापकों की शिष्यों के प्रति अभिवृत्ति सामान्य थी।, शिक्षण व्यवसाय और शिष्य के प्रति अभिवृत्ति पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा महिला अध्यापकों में ज्यादा थी।, अनुभवी महिला अध्यापक, अनुभवी पुरूष अध्यापकों की तुलना में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति ज्यादा सार्थक पाया गया।, शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और धैर्य, जागरूकता, लापरवाही, उत्तरदायित्व के बीच सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया।

अग्रवाल, जी. एस.(1986)[7] –''द स्टडी ऑफ इफैक्टिवनैस अमॉग सैकण्डरी टीचर्स इन रिलेशन टू प्राफेशनल एटीटय्डू, एक्जाइटी, रिस्कटेकिगं बिहैवियर, एक्सपीरियेसं एण्ड लाकेशन ऑफ द स्कलू इन द मोरादाबाद डिस्ट्रिक्ट'', अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में पाया कि शिक्षण कुशलता एवं व्यावसायिक मनोभाव के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ। शिक्षण कुशलता एवं जोखिम उठाने सम्बन्धी व्यवहार के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ। शिक्षण कुशलता एवं शिक्षण अनुभव के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ। शिक्षण कुशलता व दुश्चिन्ता के मध्य सार्थक रूप से ऋणात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ। शिक्षण कुशलता पर लिंग का सार्थक प्रभाव प्राप्त हुआ। व्यावसायिक मनोभाव पर लिंग का सार्थक प्रभाव प्राप्त हुआ। जोखिम उठाने सम्बन्धी व्यवहार पर लिंग का सार्थक प्रभाव प्राप्त हुआ।

महापात्रा (1987)[8] ने बुद्धि, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, सफलता के प्रति व्यावसायिक रूचि के बीच तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि अध्ययन के चारों चर बुद्धि, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, व्यावसायिक रूचियों, शिक्षण सफलता का क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से प्रभावित नहीं थे।, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का लिंग से सार्थक रूप से प्रभावित थी।

सिंह, (1987)[9] ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल स्तर के अध्यापकों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि पुरूष और महिला अध्यापकों के प्रभावशीलता और बुद्धि के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।, शहरी–ग्रामीण, अध्यापक और अध्यापिकाओं के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। ग्रामीण अध्यापक और अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और बुद्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया।

समस्या कथन

विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्य का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन योजना एवं प्रक्रियाएँ

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकत्री ने निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से तथा शोध प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया है क्योंकि इस विधि द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वांछित प्रदत्तों का सकंलन किया जा सकता है।

शोध के चर

निरीक्षण की प्रत्येक इकाई जिसका कुछ मूल्य हो, चर बन जाती है। गैरिट के अनुसार ''चर वह लक्षण या गुण है जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर परिवर्तित होते रहते हैं।''[2]

विश्लेषण

विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन

तालिका 1

विद्यालयी शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर

वर्ग अन्तरात	स्तर	विद्यालय शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या एवं प्रतिशत			
		विद्यालय शिक्षक	प्रतिशत	शिक्षक प्रशिक्षक	प्रतिशत
361–450	अति उच्च	0	0	0	0
271–360	उच्च स्तर	39	26 %	47	31.33%
181–270	औसत	80	53.33%	75	50%
91–180	निम्न	31	20.67%	28	18.67%
0–90	अति निम्न	0	0	0	0

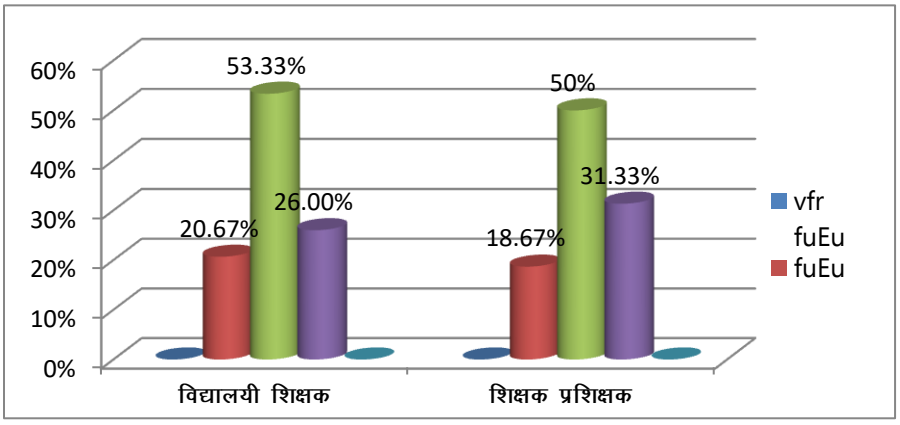

दण्ड चित्र 4.5

विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षकों की संख्या का प्रतिशत

तालिका एवं दण्ड चित्र से स्पष्ट होता है कि विद्यालयी शिक्षकों कें 150 शिक्षकों में निम्न शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक 20.67 प्रतिशत हैं। औसत शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक 52.67 प्रतिशत हैं। उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक 26.67 प्रतिशत हैं।

शिक्षक प्रशिक्षकों के 150 शिक्षकों में निम्न शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक 32.67 प्रतिशत हैं। औसत शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक प्रशिक्षक 48 प्रतिशत हैं तथा उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक प्रशिक्षक 19.33 प्रतिशत हैं। उक्त परिणाम किसी भी अध्ययन के निष्कर्षों से पुष्टि नहीं करता है। चुकिं शोध अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य के पुनरवालोकन से इस निष्कर्ष पहुंचे हैं कि शिक्षकों के शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर पर कोई शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है।

तालिका

विद्यालयी शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति स्तरों के मध्यमानों के मध्य प्रसरण विश्लेषण

	शिक्षण अभिवृत्ति								अनुपात
	उच्च		औसत		निम्न				
विद्यालयी शिक्षक	295.89	14.48	224.96	26.89	163.94	8.32	785752.73	129653.59	271.54**
शिक्षक प्रशिक्षक	298.28	14.24	226.33	28.71	163.5	87.07			

तालिका क्रमांक 4.10 से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षकों की मध्यमान 295.89 एवं मानक विचलन 14.48, औसत शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षकों की मध्यमान 224.96 एवं मानक विचलन 26.89 तथा निम्न शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षकों की मध्यमान 163.94 एवं मानक विचलन 8.32 पाया गया।

उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की मध्यमान 298.28 एवं मानक विचलन 14.24, औसत शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की मध्यमान 226.33 एवं मानक विचलन 28.71 तथा निम्न शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की मध्यमान 163.5 एवं मानक विचलन 87.07 पाया गया।

विद्यालयी शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों के निम्न, औसत एवं उच्च शिक्षण अभिवृत्ति स्तर के प्राप्तांकों के समूह के कुल वर्ग योगों का मान 785752.73, कुल माध्य वर्ग योगों का मान 129653.59 प्राप्त हुआ। एफ–अनुपात का मान 271.54 है जो कि कि–5, 294 पर एफ–अनुपात सारणी के 0.01 स्तर के मान 2.245 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना **विद्यालयी शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है** को अस्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के निम्न, औसत एवं उच्च शिक्षण अभिवृत्ति स्तर पर पाये जाने वाले शिक्षकों के मध्य सार्थक अन्तर होता है।

सारांश

शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसाकिय मूल्यों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जो कि .05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। अतः प्रस्तुत उद्देश्य से सम्बन्धित परिकल्पना ''शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।'' को स्वीकार किया जाता है।

*निर्देशिका
**शोधार्थी
स्कूल ऑफ एज्यूकेशन
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी
जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. आलिम, अक्कस (2010) : शिक्षक उद्विग्नता स्तर और उनकी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, हाक्सेटेप विश्वविद्यालय, तुर्की।
2. अन्नामलाई (2002) : शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पब्लिश वाइ काउन्सिल ऑफ एजूकेशन रिसर्च, चितलापक्कम, चेन्नई, वर्ष 28. अंक 4. पृ. सं. 22–26।
3. आस्था, सुषमा शर्मा और भार्गव, स्मृति (2011) : सेवारत प्राथमिक शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति : कुरूक्षेत्र जिले के सर्वे परिणाम (हरियाणा), Dec. 2011; Vol.1; Issue-8 p.p.192-198.
4. अहमेट, गुनेयेली एवं कैनन, आस्लान (2009) : इवेल्यूशन ऑफ टर्किश प्रोस्पेक्टिव टीचर्स एटीट्यूड टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन, नियर ईस्ट यूनिवर्सिटी।
5. औराटेगब, के आ. और अन्य (2010) : शिक्षकों की संलिप्तता, वचनबद्धता और अभिनवता, शोधकार्य, European Journal of Social Science, Year-2010, Vol.-14 No.-2, pp-250-262.
6. बेलागली, एच.पी. (2011) : माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनके लिंग एवं स्थानियता के सन्दर्भ में अध्ययन, विजयनगर कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, कर्नाटक ैमचजण 2011; Vol.3; Issue-32 pp-18-19.
7. बसु, दुर्गादास– भारत का संविधान भाग–2 नीति निर्देशक तत्व, पृ. सं. 36–51.